हिंदी

कुमारभारती

नौवीं कक्षा

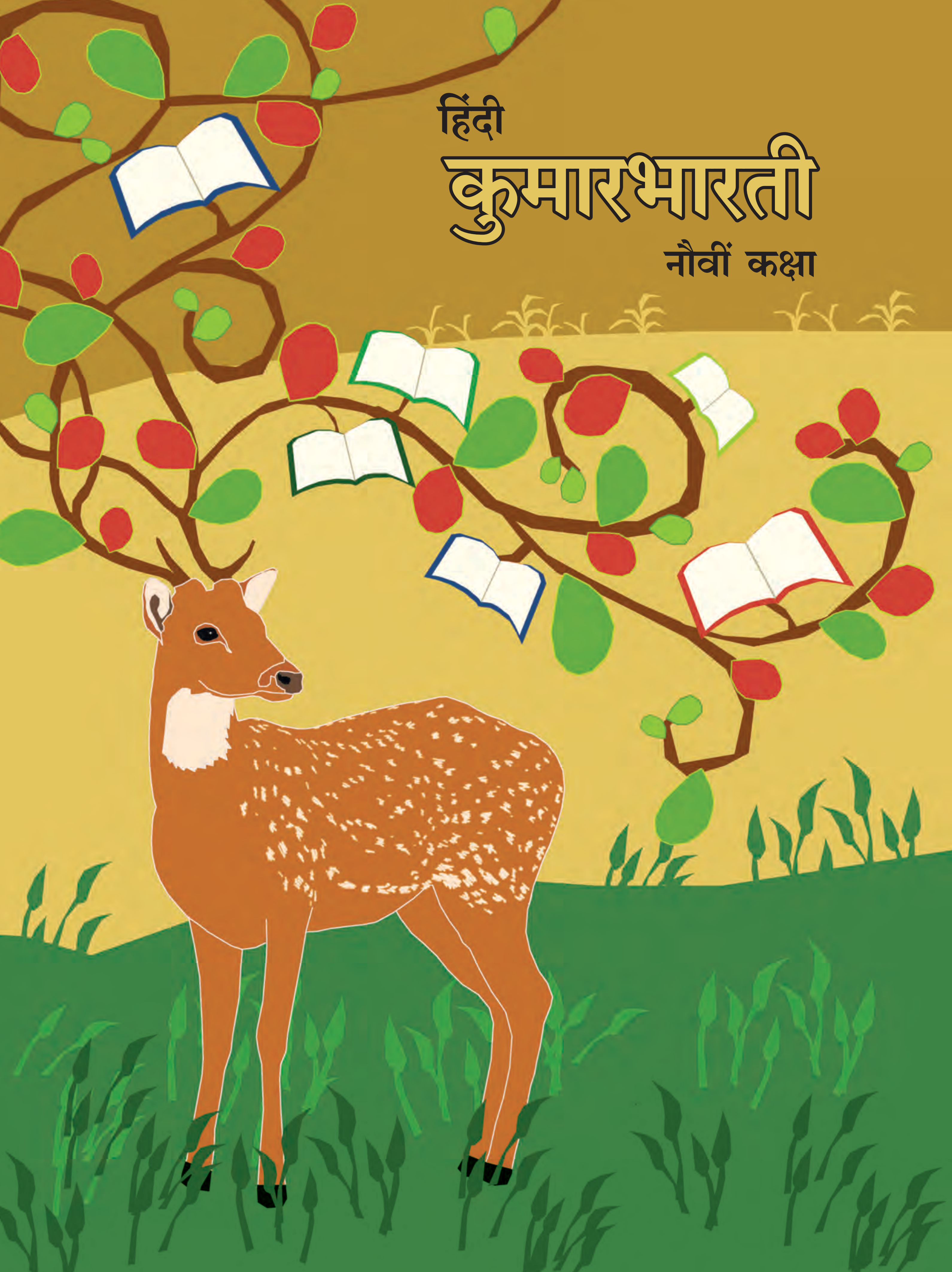

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी

कुमारभारती

नौवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

7JFH35

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१७
चौथा पुनर्मुद्रण २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्री सुमंत दळवी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. शैला चव्हाण
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : आभा भागवत
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/0.12
मुद्रक : M/s. Central Printers, Nagpur

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

नौवीं कक्षा में आप सबका हार्दिक स्वागत है । हिंदी कुमारभारती आपकी प्रिय भाषा की पाठ्‌यपुस्तक है । नौवीं कक्षा की इस पुस्तक को आपके सजग हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक आनंद हो रहा है ।

मित्रो, हम सब आपस में बातचीत करने एवं संपर्क के लिए हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं । हिंदी हमारी मातृभाषा होने के साथ-ही-साथ हमारे राष्ट्र भारत संघ की राजभाषा भी है । अतः अपने विचार, भाव, कल्पना को दूसरों तक योग्य एवं प्रभावी रूप से संप्रेषित करने के लिए इस भाषा पर प्रभुत्व होना अत्यंत आवश्यक है । इस पुस्तक का गंभीरता से अध्ययन करने और इसका नियमित प्रयोग करने से आपकी भाषा पर प्रभुत्व रखने की क्षमता का निश्चित ही विकास होगा ।

इस पाठ्‌यपुस्तक में कविता, गीत, गजल, नई कविता, कहानी, निबंध, पत्र, हास्य-व्यंग्य, एकांकी आदि विविध साहित्यिक विधाओं के साथ मराठी भाषा की लोकप्रिय विधा 'भारूड' का भी समावेश किया गया है । हिंदी की बोलियों से परिचय हेतु कवित्व, सवैयों को इस पुस्तक में स्थान दिया गया है । यह सब पढ़कर आप हिंदी साहित्य के विपुल वैभव से भी परिचित होंगे । भाषा नवनिर्मिति का एक साधन है । आपकी नवनिर्मिति के आनंद में वृद्‌धि हेतु इस पुस्तक में अनेक भाषाई कृतियों को भी समुचित ढंग से समाविष्ट किया गया है ।

इन कृतियों का नियमित अभ्यास अवश्य करें जिससे आपकी विचारशक्ति, कल्पना शक्ति एवं सृजनशीलता में अभिवृद्‌धि हो सके । इन कृतियों से आपकी लेखन क्षमता और भाषाई अभिरुचि का निश्चय ही विकास होगा । दैनिक व्यवहार में आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग भी अत्यंत आवश्यक है । हिंदी के माध्यम से इन साधनों के उपयोग के लिए अनेक संदर्भ, संकेत स्थल एवं पाठ्‌य सामग्री भी दिए जा रहे हैं । हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सब इनका समुचित उपयोग करेंगे ।

आपकी कल्पनाशक्ति एवं विचारों को तीव्रतर गति देने वाली इस पाठ्‌यपुस्तक के बारे में आप अपनी राय अवश्य दें ।

आप सबको हार्दिक शुभेच्छाएँ

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २८ अप्रैल २०१७
अक्षय तृतीया

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा हैं कि नौवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों ।

क्षेत्र	क्षमता
श्रवण	१. गद्‌य-पद्‌य की विविध विधाओं का श्रवण द्‌वारा आनंदपूर्वक रसास्वादन करना । २. आँचलिक और राष्ट्रीय सामाजिक समस्याओं को सहानुभूतिपूर्वक सुनना /सुनाना । ३. विविध संचार सेवाओं से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करते हुए सुनना/सुनाना । ४. सुने हुए अंशों पर चिकित्सक प्रतिक्रिया देना । ५. सुनी हुए प्रभावी प्रस्तुति की प्रशंसा करना और प्रस्तुति को प्रभावी बनाने वाले मुद्‌दों का आकलन करना । ६. सुनते समय कठिन लगने वाले शब्दों, मुद्‌दों, अंशों का अंकन करना ।
भाषण-संभाषण	१. कार्यक्रमों में सहभागी होकर अपना मंतव्य प्रकट करना । २. अपने मित्रों, बड़ो के साथ हिंदी में बातचीत करना । अपने भाषण-संभाषण के समय उच्चारण में सुधार करना । ३. पठित सामग्री के विचारों पर चर्चा करना तथा पाठ्‌येतर सामग्री का आशय बताना । ४. उचित आरोह-अवरोह के साथ गद्‌य-पद्‌य, स्वकथन की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति । ५. किसी कृति/उपक्रम/प्रक्रिया की स्पष्ट एवं क्रमबद्‌ध प्रस्तुति । ६. किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थिति, संवेदना आदि का स्पष्ट वर्णन और सरल व्याख्या करना । ७. उद्‌धरण, मुहावरे, कहावतें आदि का भाषण-संभाषण में प्रयोग करना । ८. विनम्रता और दृढ़ता से किसी विचार के बारे में मत व्यक्त करना और सहमति-असहमति प्रकट करना ।
वाचन	१. पाठ्‌य, पाठ्‌येतर सामग्री के केंद्रीय भाव को समझते हुए मुखर एवं मौन वाचन करना । २. विविध पुरस्कार प्राप्त साहित्यकारों की जानकारी तथा जीवनियों का संपूर्ण वाचन करना । ३. लिखित अंश का वाचन करते हुए उसकी अचूकता, स्पष्टता, पारदर्शिता, आलंकारिक भाषा की प्रशंसा करना । ४. विचारों की भिन्नता, तुलना, विरोध को समझने के लिए वाचन करना । ५. साहित्यिक लेखन, अपने पूर्व ज्ञान एवं स्वःअनुभव के बीच मूल्यांकन करते हुए सहसंबंध स्थापित करना । ६. लेखन के उद्‌देश्य का आकलन करते हुए उसके स्रोत की प्रामाणिकता का पता लगाकर उचित निर्णय लेना ।
लेखन	१. हिंदी के व्यावहारिक उपयोग-प्रयोग को समझकर व्यावसायिक पत्र आदि प्रकारों का लेखन करना । २. कहानी का एकांकी में तथा संवादों का कहानी में रूपांतरण करना । नियत प्रकारों पर स्वयंस्फूर्त लेखन करना । पठित सामग्री पर आधारित प्रश्नों के अचूक उत्तर लिखना । ३. गद्‌य-पद्‌य पर आधारित प्रश्न निर्मिति एवं उत्तर लेखन करना । ४. स्वच्छ, शुद्‌ध, मानक, सजावटी लेखन एवं सहज पुनरावलोकन करके शुद्‌धीकरण करना । ५. किसी विचार, भाव का सुसंबद्‌ध प्रभावी लेखन करना, व्याख्या करना, संक्षिप्त भाषा में अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं की संक्षिप्त अभिव्यक्ति करना । ६. किसी भाव, विचार को विस्तारित रूप देते हुए स्वयं के अनुभव का दूसरों के अनुभव से संबंध स्थापित करते हुए तुलनात्मक लेखन करना । ७. उचित प्रारूप में घटना, प्रसंग, सर्वेक्षण का वृत्तांत, टिप्पणी लेखन करना । (डायरी आदि) ८. किसी पुस्तक, चित्रपट, दूरदर्शन के कार्यक्रम नाटक आदि की समीक्षा करना । ९. लेखन को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न तकनीकी, उद्‌धरण, कहावतें, मुहावरे, आलंकारिक शब्दावली का उचित उपयोग करना ।

अध्ययन कौशल	१. श्रवण और वाचन के समय स्वयं के संदर्भ के लिए आवश्यकतानुसार टिप्पणियों के माध्यम से पुनः स्मरण करना । २. उपयोगी शब्द उद्‌धरण, मुहावरे-कहावतें, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, सुवचन दोहे आदि का संकलन एवं उपयोग । ३. विभिन्न अनौपचारिक तथ्यों का मातृभाषा से हिंदी और हिंदी से मातृभाषा में अनुवाद करना । ४. साक्षात्कार, अतिरिक्त सूचना तथा निर्धारित उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न निर्मिति करना । ५. सूचनाओं को प्रस्तुत करने के लिए समुचित आलेख का चुनाव कराना ।
व्याकरण	१. पुनरावर्तन-कारक, वाक्य परिवर्तन एवं प्रयोग- वर्ण विच्छेद/ वर्ण मेल (सामान्य), काल परिवर्तन, पर्यायवाची-विलोम, उपसर्ग-प्रत्यय, २. अलंकार, छंद परिचय ३.विकारी, अविकारी शब्दों का प्रयोग ४. **अ.** विरामचिह्न (..., × × × , -०-, .) **ब.** शुद्‌ध उच्चारण प्रयोग और लेखन (स्रोत, स्त्रोत, शृंगार) ५. मुहावरे-कहावतें प्रयोग, चयन

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । भाषिक कौशलों के प्रत्यक्ष विकास के लिए पाठ्‌यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय' एवं 'लेखनीय' में दी गई हैं । पाठ पर आधारित कृतियाँ 'पाठ के आँगन' में आई हैं । जहाँ 'आसपास' में पाठ से बाहर खोजबीन के लिए है, वहीं 'पाठ से आगे' में पाठ के आशय को आधार बनाकर उससे आगे की बात की गई है । 'कल्पना पल्लवन' एवं 'मौलिक सृजन' विद्‌यार्थियों के भावविश्व एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'भाषा बिंदु' व्याकरणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसमें दिए गए अभ्यास के प्रश्न पाठ से एवं पाठ के बाहर के भी हैं । विद्‌यार्थियों ने उस पाठ से क्या सीखा, उनकी दृष्टि में पाठ, का उल्लेख उनके द्‌वारा 'रचना बोध' में करना है । 'मैं हूँ यहाँ' में पाठ की विषय वस्तु एवं उससे आगे के अध्ययन हेतु संकेत स्थल (लिंक) दिए गए हैं । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । कृतियों और उदाहरणों के द्‌वारा संकल्पना तक विद्‌यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आप सबके कंधों पर है । 'पूरक पठन' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करती है और यह विद्‌यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः 'पूरक पठन' सामग्री का वाचन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर कृतियों, भाषिक खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्वों के विकास के अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें। क्षमता विधान एवं पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी संदर्भों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	समय की शिला पर	नवगीत	शंभूनाथ सिंह	१-२
२.	सींकवाली	वर्णनात्मक कहानी	सुनीता	३-८
३.	अच्छा पड़ोस	हास्य-व्यंग्य निबंध	अरुण	९-१३
४.	शौर्य (पूरक पठन)	कवित्त	भूषण	१४-१६
५.	बर्फ की धरती	यात्रा वर्णन	कृष्णा सोबती	१७-२२
६.	नदी और दरिया	गजल	दुष्यंत कुमार	२३-२४
७.	मातृभूमि का मान	एकांकी	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२५-३२
८.	हिरणी (पूरक पठन)	चित्रात्मक कहानी	रत्नकुमार सांभरिया	३३-३७
९.	मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	कविता	महादेवी वर्मा	३८-३९
१०.	पृथ्वी-आकाश	पत्र	श्रीराम परिहार	४०-४५
११.	दिवस का अवसान	महाकाव्य (अंश)	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४६-४८
१२.	झलमला (पूरक पठन)	लघुकथा	पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी	४९-५१
१३.	क्या सचमुच आजाद हुए हम ?	गीत	कर्नल डॉ. वीरेंद्र प्रताप सिंह	५२-५४

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	वसंत-वर्षा	सवैया	पद्माकर भट्ट	५५-५७
२.	ताई	संवादात्मक कहानी	विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'	५८-६५
३.	गोदान	उपन्यास (अंश)	प्रेमचंद	६६-७२
४.	निर्मल जिंदगी (पूरक पठन)	भारूड़	रमेश यादव	७३-७४
५.	चेतना	साक्षात्कार	डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम	७५-७९
६.	नवनीत	दोहरे	संत तुकाराम	८०-८१
७.	सपनों से सत्य की ओर (पूरक पठन)	भाषण	आनंद बनसोडे	८२-८८
८.	मित्रता	सत्य कहानी	चेतना	८९-९३
९.	बादल को घिरते देखा है	नई कविता	नागार्जुन	९४-९६
१०.	क्रोध (पूरक पठन)	मनोवैज्ञानिक निबंध	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	९७-१०१
११.	अद्‌भुत वीर	खंडकाव्य (अंश)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	१०२-१०४
१२.	सच का सौदा	चरित्रात्मक कहानी	सुदर्शन	१०५-११२
१३.	विप्लव गान	कविता	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	११३-११४
	रचना विभाग एवं व्याकरण विभाग			११५-१२०